

॥श्री महिषासुरमर्दिनीस्तोत्रम् ॥

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दनुते
गिरिवरविंध्यषिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते ।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जयजय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥

१

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि धुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते ।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥

२

अयि जगदम्ब मदम्ब कदम्बवन प्रियवासिनि हासरते
शिखरिशिरोमणि तुंगहिमालय शृंग निजालय मध्यगते ।
मधुमधुरे मधुकैतभभञ्जिनि कैटभभञ्जिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥

३

अयि शतखण्ड विखण्डितरुण्ड वितुण्डितशुण्ड गजाधिपते
रिपुगजगण्ड विदारणचण्ड पराक्रम शुण्ड मृगाधिपते ।
निजभुजदण्ड निपातितखण्ड विपतितमुण्ड भटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥

४

अयि रणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभृते
चतुरविचार धुरीणमहाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते ।
दुरितदुरीह दुराशयदुर्मति दानवदूत कृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥

५

अयि शरणागत वैरिवधूवर वीरवराभय दायकरे
त्रिभुवन मस्तक शूलविरोधि शिरोधिकृतामल शूलकरे ।
दुमिदुमितामर दुन्दुभिनाद महोमुखरीकृत तिग्मकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥

६

अयि निजहुङ्कृतिमात्र निराकृत धूमविलोचन धूमचते
समरविशेषित शोणितबीज समुद्भव शोणित बीजलते ।
शिवशिव शुम्भ निशुम्भमहाहव तर्पित भूत पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥

७

धनुरनुसङ्ग रणक्षणसङ्ग परिस्फुरदङ्गनटत्कटके
कनक पिशङ्ग पृषत्कनिषङ्गरसद्भट शृङ्ग हतावटुके ।
कृतचतुरङ्ग बलक्षितरङ्ग घटदबहुरङ्ग रटदबटुके
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥

८

जय जय जप्यजये जय शब्द परस्तुति तत्पर विश्वनुते
भण भण भिन्जिमि भिंक्रतनूपुर सिंजितमोहित भूतपते ।
नटितनटार्ध नटीनटनायक नाटितनाट्य सुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥

९

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कान्तियुते
श्रितरजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्र वृते ।
सुनयनविभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमरधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥

१०

सहितमहाहव मल्लमतल्लिक मल्लितरल्लक मल्लरते
विरजितवल्लिक पल्लिकमल्लिक भिल्लिकभिल्लक वर्गवृते ।
सितकृतफुल्ल समुल्लसितारुण तल्लज्जपल्लव सल्लल्लिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥

११

अविरलगण्डगलन्मदमेदुर मत्तमतङ्गजराजपते
त्रिभुवनभूषणभूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते ।
अयि सुदतीजन लालसमानस मोहनमन्मथ राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥

१२

कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भाललते
सकलविलास कलानिलयक्रम केलिवलत्कल हंसकुले ।
अलिकुल संकुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्रकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥

१३

करमुरलीरववीजित कूजित लज्जित कोकिल मञ्जुमते
मिलितपुलिन्द मनोहर गुञ्जित रञ्जितशैल निकुञ्जगते ।
निजगुणभूत महाशबरीगण सद् गुणसंभूत केलितले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥

१४

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चन्द्ररुचे

प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुर दंशुलसन्नख चन्द्ररुचे।
जितकनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भरकुंजरकुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १५

विजित सहस्रकरैक सहस्र करैक सहस्रकरैकनुते
कृतसुरतारक संगरतारक संगरतारक सूनसुते।
सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १६

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनंसशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् ।
तव पदमेव परंपदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १७

कनकलसत्कल सिन्धुजलैरनु सिंचिनुतेगुण रंगभुवं
भजति स किं न शचीकुचकुम्भ तटीपरिरम्भ सुखानुभवम् ।
तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १८

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दु मलं सकलं ननु कूलयते
किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते ।
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुतक्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १९

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतोजननी कृपयासि यथासि तथाऽनुमितासिरते ।
यदुचितमत्र भवत्युररी कुरुतादुरुतामपाकुरुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ २०